MAA OMWATI DEGREE COLLEGE

HASSANPUR

NOTES

CLASS:- MA (HISTORY 3RD SEM)

SUBJECT:- ECONOMIC HISTORY OF INDIA -I (1757 TO 1947 A.D.)

DELTA Pg No.
Date / /

Question-1 मध्यकालीन व्यापार और वाणिज्य के विकास का उल्लेख करो।

Answer मध्यकालीन भारत में व्यापार एवं वाणिज्य का काफी विकास हुआ। देश का आन्तरिक तथा विदेशी व्यापार एवं वाणिज्य का दोनो ही काफी विकसित अवस्था में थे। विशाल नगरों, बन्दरगाहों तथा व्यापारिक मार्गों की सु-व्यवस्था ने इसके विकास में अहम योगदान दिया था। मध्यकालीन भारत के व्यापार वाणिज्य के अध्ययन को हम दो भागो मे विभाजित करते है (सल्तनतकालीन और मुगलकालीन) इसका वर्णन इस प्रकार है —

I. सल्तनत काल मे व्यापार व वाणिज्य

सल्तनत काल मे भारत मे आन्तरिक तथा विदेशी व्यापार का विकास हुआ। प्रो. सतीश चन्द्र के अनुसार "सल्तनत काल मे उत्तर भारत मे अनेक नगरों की स्थापना हुई तथा मुद्रा का प्रचलन बढ़ा। इस काल मे भारतीय व्यापार एवं वाणिज्य का अध्ययन निम्न

Scanned with ACE Scanner

DELTA Pg No. Date

श्रेणियों के अन्तर्गत किया जा सकता है

i) आन्तरिक व्यापार
ii) विदेशी व्यापार

आन्तरिक व्यापार

i) स्थानीय व्यापार -

यह व्यापार गाँव के बीच एवं मंडियों तथा जिला व शहरों के बीच होता था। ग्रामीणों की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बाजार व हाट लगाते थे। इस हाट में अनाज के साथ पशु एवं विभिन्न वस्तुएँ बिक्री के लिए आती थी। छोटे व्यापारी फेरी लगाकर अपना माल बेचते थे।

ii) लम्बी दूरी का व्यापार -

सल्तनत काल में महानगरों एवं देश के विभिन्न क्षेत्रों के बीच व्यापार भी काफी उन्नत था। यह कार्य धनी व्यापारी एवं महाजन, साहू, मोदी एवं सर्राफ करते थे। ये लोग देश

DELTA Pg No. Date

के आन्तरिक भागों एवं आन्तरिक भागों एवं महानगरों में अपना सामान बेचते थे। उनके व्यापार की प्रमुख वस्तुओं में अनाज, तेल, घी आदि थे।

iii) विदेशी व्यापार -

भारत का विदेशों के साथ व्यापारिक संबंध प्राचीन काल से ही रहा है। सल्तनत युग में भारत का विदेशी व्यापार प्रशान्त महासागर एवं भूमध्य सागर के देशों तक फैला हुआ था। भारतीय माल पश्चिमी एशिया, यूरोप, पूर्वी अफ्रीका, पूर्वी द्वीप समूह, जापान तथा चीन को जाता है।

निर्यात -

सल्तनत काल में भारत का निर्यात भी जल व स्थल मार्गों से होता था। भारतीय माल की विदेशों में बड़ी खपत थी। देवल, खम्भात, आदि बन्दरगाहें केन्द्र थे। मसालिक-अल-अवसार में भारत से निर्यात जाने वाले 21 प्रकार के चावलों का उल्लेख है

Scanned with ACE Scanner

मुगलकाल मे व्यापार व वाणिज्य -

मुगल काल की राजनैतिक स्थिरता एंव कृषि के विस्तार मे वृद्धि की इस काल मे उत्पादन स्थानीय खपत से ज्यादा होने लगा। अतिरिक्त उत्पादन ने व्यापारिक गतिविधियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

आन्तरिक व्यापार -

मुगल काल मे कृषि एंव उद्योग के क्षेत्र मे होने वाले अतिरिक्त उत्पादन ने आन्तरिक व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ाया। देश के विभिन्न भागों के बीच होने वाले अतिरिक्त उत्पादन ने आन्तरिक व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ाया।

i) स्थानीय एंव प्रान्तीय व्यापार -

मुगलकाल मे व्यापारिक गतिविधियाँ स्थानीय स्तर से शुरू हो जाती थी। इस युग मे भू - राजस्व नकद के रूप मे लिया जाता था। अतः किसान भू - राजस्व चुकाने के लिए फालतू अनाज को गाँव के बनियों तथा अतः किसान भू - राजस्व चुकाने के लिए गाँव को बेच देते थे।

ii) विदेशी व्यापार -

अति प्राचीन से ही भारत के व्यापारिक संबंध अनेक देशों से रहे है। इस काल मे भी एशिया, यूरोप तथा अफ्रीका के अनेक देशों के साथ भारत का व्यापारिक संबंध था।

iii) निर्यात -

इस युग मे भारत स्थल तथा जलमार्ग से अनेक वस्तुएँ विदेशों मे भेजता था। इनमें मुख्य रूप से कपड़ा, शोरा, नील, मसाले, अफीम, चीनी, नमक, विलास इत्यादि वस्तुएँ शामिल थी। निर्यात की वस्तुओं मे कपड़ा सबसे प्रमुख था। संसार के विभिन्न भागों को मध्य, एशिया, फारस निर्यात होता था।

Scanned with ACE Scanner

Question-2 ग्रामीण अर्थव्यवस्था के पतन के कारणों की व्याख्या कीजिए।

Answer निःसंदेह ब्रिटिश शासन से पूर्व भारत विश्व का एक बहुत समृद्ध और सम्पन्न राष्ट्र माना जाता था। सम्पूर्ण 17वीं और 18वीं सदी के पूर्वार्द्ध में देश की अर्थव्यवस्था समृद्ध थी; कृषि एवं व्यापार तथा उद्योग उन्नत दशा में था।

स्वदेशी उद्योगों के पतन / आर्थिक प्रभाव

स्वदेशी उद्योगों के पतन के निश्चयात्मक रूप से कुप्रभाव पड़े-

1.) भारत के विश्व प्रसिद्ध उद्योग एक-एक करके नष्ट होते गये। फलस्वरूप भारत की आर्थिक प्रतिष्ठा को गहरी क्षति पहुँची।

2. देश की अर्थव्यवस्था एकदम लड़खड़ा गई और पतन की ओर बढ़ती हुई जड़ता की स्थिति में पहुँच गई।

3) आर्थिक क्षेत्र में भारत के कला-कौशल को अपूर्णनीय क्षति पहुँची।

4. स्वदेशी उद्योग के पतन से देश के निर्यात को भारी धक्का लगा। दूसरी ओर ब्रिटिश कारखानों का माल भारी मात्रा में देश में प्रवेश करने लगा।

देश की निर-औद्योगीकरण पर डा० ताराचंद के विचार -

देश के कुटीर उद्योगों के विनाश का एक गंभीर आर्थिक परिणाम यह हुआ कि उनमें लोग भूमि पर निर्भर होने के लिए बाध्य हो गए। अंग्रेजों ने भारतीय ग्रामोद्योगों या हस्तशिल्प नष्ट कर दिया। किन्तु उनके स्थान पर रोजगार का कोई अन्य स्त्रोत कायम नहीं किया। 19वीं शताब्दी के मध्य लगभग 55 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर थी जबकि 1901 में कृषि पर निर्भर लोगों की संख्या 68 प्रतिशत और 1931 में 72 प्रतिशत हो गई।

खेती और खेतिहर की स्थिति –

यह अजीब लगता है कि जब कई तरह के ऐसे कारण उत्पन्न हो गए थे जिनसे खेतिहर लोगों की दशा और बुरी होती जा रही थी परन्तु वास्तव में ऐसा हो रहा था कि खेतिहरों दशा बुरी होती जा रही थी। उदाहरण के लिए खेती का कुल क्षेत्र 1891-92 में जहाँ 18.775 करोड़ एकड़ था, वहाँ 1901-02 में 19.971 करोड़ और 1910-11 में 23.3 करोड़ एकड़ हो गया।

निर-औद्योगीक प्रक्रिया चालू होना –

19 वी सदी में औद्योगिक विकास की जानबूझकर अवहेलना भारत और ब्रिटेन के सम्बन्धों की कहानी का सबसे दुखभरा अध्याय है। भारत का प्राचीन उद्योग-धंधा जिससे भूतकाल में भारत के लोगों की एक काफी बड़ी संख्या

को लाभदायक रोजगार मिलता था और जिसके कारण संसार का सोना और चाँदी यहाँ पर खिंचा आता था, इसी तरह चौपट हो चुका था। कोई भी नया उद्योग नष्ट दस्तकारियों का स्थान न ले सका और जापान की तरह की तरह का कोई प्रयत्न नहीं किया गया कि दस्तकारी की पद्धति को नई औद्योगिक अर्थव्यवस्था के साथ मिलाकर एक नई पद्धति बनाई जाए।

ग्रामीण आर्थिक जीवन के पतन के कारण

1) **कृषि को बढ़ावा न मिलना** –

कृषि प्राचीन समय से ही भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है। कृषि से भारत चलता आया है। आज की अर्थव्यवस्था भी कृषि पर टिकी हुई है। 18 वी सदी में किसी भी तत्व ने कृषि को सहयोग ना

Scanned with ACE Scanner

2) बाजारीकरण की नीति का अति सीमित होना –

ग्रामीणों की जरूरते गाँव से ही पूर्ण हो जाती थी। वे अन्य क्षेत्र के बाजारों की तरफ नही बढ़े जिससे की बाजारीकरण की नीति को बढ़ावा नही मिला।

3) परम्परागत सिद्धांत –
समाज मे अनेक परम्परागत सिद्धांत या रीति रिवाज चले आ रहे थे जैसे बढ़ई का कार्य केवल बढ़ई ही कर सकता है, धोबी का कार्य केवल धोबी ही जाति के लोग कर सकते है। जाति के अनुरूप व्यवसाय चलना विकासात्मक गुण नही था।

4) मुद्रा का प्रयोग न होना –
18 वी सदी के ग्रामीण आर्थिक जीवन मे मुद्रा का प्रयोग न के बराबर था। वस्तुओ के बदले वस्तुएं आदान - प्रदान की जाती थी।

Question: 3 उपनिवेश काल मे भारत के शिल्प उद्योग का वर्णन करो।

Answer: ब्रिटिश शासन से पूर्व भारत विश्व का एक बहुत समृद्ध और सम्पन्न राष्ट्र माना जाता था। 18 वी शताब्दी के पूर्वार्द्ध मे भी देश की अर्थव्यवस्था समृद्ध थी, कृषि एवं व्यापार तथा उद्योग उन्नत दशा मे थी। स्वदेशी उद्योगो के कारण यह देश विश्वविख्यात था और भारत को विश्व वर्कशाप कहा जाता था। भारतीय माल की विदेशो मे बड़ी माँग थी।

भारत मे कुटीर उद्योगो के पतन के कारण

अंग्रेजो द्वारा भारत मे राज्य विस्तार से पूर्व बहुत लम्बे अर्से से भारत के साथ यूरोपीय लोग व्यापार करते आ रहे थे, लेकिन इससे भारत की आर्थिक स्थिति पर कोई प्रतिकूल प्रभाव

Scanned with ACE Scanner

नहीं पड़ा था। ब्रिटिश शासकों ने अपनी प्रतिक्रियावादी और शोषणकारी नीति से भारतीय उद्योगों को पतन की पराकाष्ठा पर लाकर पटक दिया।
भारत में कुटीर उद्योगों के पतन के महत्वपूर्ण कारण इस प्रकार है —

1) **दुर्बल राजनीतिक व्यवस्थाएँ तथा अशांति** —

औरंगजेब के बाद उसके उत्तराधिकारियों के परस्पर युद्धों के परिणामस्वरूप दुर्बल राजनीतिक व्यवस्थाएं अस्तित्व में आई।

2) **ब्रिटिश शासन का उदय** —

नई राजनीतिक परिस्थितियों में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन का उदय हुआ। देशी - राजा - महाराजाओं व नवाबों का अंत हो गया। ये स्थानीय शासक कारीगरों तथा उद्योगों के संरक्षक भी थे।

My NoteBook Sign.

3) **ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की नीतियाँ** — ईस्ट इंडिया कंपनी विदेशी व्यापार पर एकाधिकार पाने के साथ ही देशी कारीगरों का शोषण आरम्भ कर दिया। कारीगरों पर अनेक बाधकारी एवं दमनात्मक प्रतिबंध लगाए गए।

4) **कुटीर उद्योगों के पतन के आर्थिक कारण**

1) देश में गरीबी, बेकारी और भुखमरी बड़ी तेजी से बढ़ी।
2) भारत मुख्यतः कृषि-प्रधान देश बनकर रह गया।
3) कलाकारों, कारीगरों एवं कला-कौशल को अपूरणीय क्षति पहुँची।

औद्योगीकरण की नीति — देश के कुटीर उद्योगों अथवा हस्तशिल्प या स्वदेशी उद्योगों के विनाश का एक गंभीर आर्थिक परिणाम यह हुआ कि उनमें लगे हुए लोग भूमि पर निर्भर होने के

My NoteBook Sign.

Scanned with ACE Scanner

लिए बाध्य हो गए। अंग्रेजो ने भारतीय ग्रामोद्योग या हस्त शिल्प नष्ट कर दिया, किन्तु उनके स्थान पर रोजगार का कोई अन्य स्त्रोत कायम नही किया।

अनौद्योगिकरण नीति का कारण —

1) **ब्रिटेन की औद्योगिक** —

18 वी शताब्दी मे ब्रिटेन तथा यूरोप के अन्य राज्यो मे औद्योगिक क्रांति हुई जिससे वहाँ उत्पादन मे तेजी से वृद्धि हुई। अनेक बड़े-बड़े कारखाने स्थापित किए गए, जिनमे वृहत स्तर पर उत्पादन प्रारंभ हुआ।

2) **पूँजीपतियो के स्वार्थ** —

इंग्लैंड के पूँजी पतियो को भारत से उत्पादित माल खरीदने के स्थान पर कच्चा माल आयात करना अधिक लाभदायक था। पहले इंग्लैंड के वस्त्रोद्योग के लिए कपास की आपूर्ति अमेरिका से होती थी।

3) **सस्ती दरो पर कच्चे माल का निर्यात** —

अपनी राजनैतिक सत्ता के बल पर ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियो ने भारत को दोनो तरफ से लूटना प्रारंभ किया। एक तरफ तो कपास, चाय आदि वस्तुएं कच्चे माल के रूप मे सस्ती दरो पर इंग्लैंड को निर्यात की जाती थी।

4) **अनौद्योगिकरण की नीति के प्रभाव** —

औद्योगिक विकास की जान-बूझकर की गई अवहेलना भारत और ब्रिटेन के सम्बन्धो की कहानी का सबसे दुःख भरा अध्याय है। भारत के प्राचीन धन्धे, जिससे भूतकाल मे भारत के लोगो को काफी बड़ी संख्या मे लाभप्रद रोजगार मिलता था।

DELTA Pg No. Date DELTA Pg No. Date My NoteBook Sign. My NoteBook Sign. Scanned with ACE Scanner

Question: स्थायी बन्दोबस्त की मुख्य विशेषताओं और प्रभावों का वर्णन कीजिए।

Answer: प्रशासन का स्वरूप एवं उसका विकास स्थानीय सामाजिक तथा आर्थिक आवश्यकताओं के अनुरूप होता है। वह सामान्यतः समाज के विकास और उसकी समृद्धि में सहायता प्रदान करता है भू राजस्व के क्षेत्र में किए गए इन सुधारों का अध्ययन हम मुख्य रूप से तीन शीर्षकों के अन्तर्गत कर सकते हैं-

I) स्थायी बन्दोबस्त
II) रैयतवाड़ी प्रणाली
III) महालवाड़ी प्रणाली

इनका विस्तृत वर्णन इस प्रकार है-

स्थायी बन्दोबस्त -

कार्नवालिस 1784 ई० में गवर्नर जनरल बनकर भारत आया तो भारत की स्थिति बड़ी खराब थी। उसने स्वयं लिखा "कि भारत का एक तिहाई भाग जंगल के समान है। जिनमें जंगली जानवर रहते हैं।

स्थायी बन्दोबस्त के प्रभाव -

1) कृषकों से भूमि का स्वामित्व छीनकर जमींदारों को सौंप दिया गया।
2) कृषकों पर जमींदारों के अत्याचार बढ़ने लगे। जमींदार अधिक से अधिक लगान प्राप्त करने के प्रयासों में किसानों को भूमि से बेदखल करने लगे।

जमींदारों पर प्रभाव -

1) भूमि का स्वामित्व जमींदारों के हाथ में आ गया।
2) भू - राजस्व के अतिरिक्त अन्य करों की अदायगी से वे मुक्त हो गए।
3) भूमि के सुधार तथा कृषि उत्पादन में वृद्धि का समस्त लाभ उन्हें मिलने लगा।

DELTA Pg No. Date

II रैयतवाड़ी प्रणाली —

मद्रास प्रान्त के बड़ा महल जिले में सर्वप्रथम 1792 ई० में भू - राजस्व की यह प्रणाली कैप्टन रीड तथा थॉमस मुनरो द्वारा लागू की गई। वास्तव में थॉमस मुनरो ही इस प्रणाली का प्रवर्तक था।

कारण —

1) बंगाल में लागू किए गए स्थायी बन्दोबस्त के दोष सामने आने प्रारम्भ हो गए थे।

2) मुनरो जमींदारों तथा ठेकेदारों का एक अलग वर्ग बनाने के विरुद्ध था।

3) मद्रास प्रान्त में बंगाल के समान ऐसे बड़े जमींदार नहीं थे जिनसे समझौता किया जा सके।

प्रभाव —

कृषकों को भू स्वामी मान लिया गया। अब भूमि उसकी व्यक्तिगत सम्पत्ति थी जिसे वह

बेच सकता था, गिरवी रख सकता था अथवा कुछ समय के लिए ठेके पर दे सकता था।

सरकार पर प्रभाव —

भूमि की उपज बढ़ाने पर वह कृषक से अधिक दर पर लगान वसूल कर सकती थी।

2) सरकार और कृषकों के बीच कोई मध्यस्थ न रहा।

3) सारी अनाधिकृत भूमि भी उसके अधिकार में आ गई।

महालवाड़ी प्रणाली —

उन्नीसवीं सदी के प्रथम दशक में कम्पनी को उत्तर पश्चिमी क्षेत्रों की प्राप्ति हुई। ये सत्तांतरित तथा विजित क्षेत्र में थे। सत्तांतरित प्रदेश वह क्षेत्र था, जो अवध के नवाब ने 1801 में कम्पनी को सन्धि के अन्तर्गत सौंपा था। इनमें सात जिले थे - इटावा, मुरादाबाद, फर्रुखाबाद, कानपुर,

Scanned with ACE Scanner

DELTA Pg No.
Date

गोरखपुर और बरेली।

प्रभाव —

1) किसानों को भूमि का भू स्वामी मान लिया गया।

2) किसान अपनी भूमि की उन्नति कर सकता था क्योंकि उसे लाभ का एक अंश मिलता था।

3) कई मह्यालों में लगान की ऊँची दरों ने किसानों की कमर तोड़ दी।

4) ग्राम समुदायों के मुखियाओं ने भी कृषकों का शोषण किया।

निष्कर्ष —

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अंग्रेजो ने ज्यादा से ज्यादा भूमि एकत्रित करने के लिए समय - समय पर अलग-अलग क्षेत्रों मे अलग - अलग भू - राजस्व प्रणालियों को अपनाया। इनमे किसानों की दशा सुधारने की ओर कोई ध्यान नही दिया गया।

My NoteBook Sign.

DELTA Pg No.
Date

Question-5 कृषि के वाणिज्यीकरण पर एक लघु लेख लिखिए।

Answer **कृषि का व्यवसायीकरण** —

भारत मे अंग्रेजी सरकार ने सन् 1835 मे पश्चिमी वैज्ञानिको शिक्षा पद्दति को लागू किया। यह भारतीय सभ्यता और संस्कृति मे आधुनिकरण की ओर बड़ा कदम था। लार्ड डलहौजी ने 1854 मे पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट, स्थापित किया। उदारवादियों ने खुले व्यापार और प्रतियोगिता का नारा दिया उनका नारा था

" वही सरकार अच्छी जो मनुष्य के व्यक्तित्व जीवन मे कम से कम दखल दे।"

इंग्लैंड ने इस कारण भारत मे भी यही नीति लागू की। इससे भारत मे पुरानी अर्थव्यवस्था नष्ट हो गई। मशीनो द्वारा बने कपड़े का मुकाबला नही कर

My NoteBook Sign.

Scanned with ACE Scanner

DELTA Pg No.
Date

सकता था। इस कारण भारत से कच्चे माल पर निर्यात पर ध्यान दिया गया। पुरानी व्यवस्था मे मजदूरी और व्यापार वस्तु के आदान - प्रदान पर चलता था। उपज व्यापार के साथ जुड़ गई। गेहूँ और कपास संसार के तथा इंग्लैंड की मिलो और मण्डियो मे बिकने लगी। गाडगिल के शब्दो मे —
"कृषि मे उन फसलो को अधिक बोना शुरू हुआ जो उद्योगो और व्यापार के लिए काम आती थी।"

कृषक अब उन फसलो को लगाता जो बाहर बेची जा सकती थी। यह इसकी नई व्यवस्था थी, जो इससे पहले भारत मे पिछली शताब्दी मे उपलब्ध नही थी। भारत मे अंग्रेजी मिलो के लिए अमेरिकन लम्बी कपास की खेती भी

My NoteBook
Sign.

DELTA Pg No.
Date

शुरू हो गई। गाँव मे व्यवसायिक खेतीकरण के साथ पैसो का लेन देन बढ़ गया। किसान लगान भी नकदी मे देने लगा।

अकाल -

1868 मे राजपूताना मे अकाल पड़ा। 1876-78 मे निजाम के राज मे पड़ा। मैसूर पर भी इसका असर पड़ा, उत्तर पूर्वी प्रान्त पर भी कुछ प्रभाव पड़ा। 1876- बम्बई, कर्नाटक के भागो मे जहाँ रेल न पहुँची वहा अकाल पड़ा। इन प्राकृतिक आपदाओ के कारण प्रथम विश्व युद्ध तक कई बार उतार - चढाव भारत की कृषि मे आए।

ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार और कृषि सुधार

कम्पनी सरकार के समय कृषि सुधार के लिए कुछ

My NoteBook
Sign.

Scanned with ACE Scanner

लोगों ने निजी रूप से भी काम किया जैसे डा० कैरी ने कुछ एग्री हार्टीकल्चर सोसायटीज बनाई। सरकार ने कुछ बोटानिकल बाग और कुछ प्रयोगशालाएँ बनाईं। 1866 ई० में ऐसी दो प्रयोगशालाएँ प्रसिद्ध थी। इनमें नए बीज और पौधों पर खोज की जाती थी। रूई में सुधार के लिए भी काम किया गया। 1870 में इसके अतिरिक्त सरकार ने कुछ ध्यान न दिया।

प्रभाव –

कृषि व्यवसायीकरण की नीति का कुछ धनी और कुलीन कृषकों एवं जमींदारों पर तो अच्छा प्रभाव पड़ा। वे धनी हो गए परन्तु उन्होंने धन गरीब किसानों को कर्जा देने में तो लगाया परन्तु कृषि सुधार में नहीं लगाया परन्तु कृषि सुधार में नहीं लगाया। इससे इंग्लैंड जैसी क्रान्ति भारत में नहीं हुई। गरीब किसानों और जमींदारों पर बुरा प्रभाव पड़ा।

उपद्रव –

खेती के व्यवसायीकरण की नीति के कारण ग्रामीण लोग दुःखी हुए और कई जगह पर भयानक उपद्रव हुए। 1873 ई० में पबना दंगे, 1875 ई० में दक्षिण में नील विद्रोह, 1845 में असम में किसान विद्रोह हुए।

निष्कर्ष –

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि ब्रिटिश हितों की पूर्ति के लिए भारत में औपनिवेशिक सरकार ने कृषि के वाणिज्यिकरण को बढ़ावा दिया। इससे सफल बनाने के लिए यातायात के साधनों का विकास किया गया।

Question 6 ब्रिटिश शासन के अधीन कृषि संबंधी पर प्रकाश डालिए।

Answer

भूमिका — अंग्रेजी सरकार के राज्य मे कृषि की परम्परागत व्यवस्था नष्ट हो गई तथा भारत से अधिकाधिक धन के शोषण हेतु कृषि की अनेक समस्याएँ उत्पन्न कर उसे अवनत किया गया जो भारत की अर्थ व्यवस्था के लिए घातक सिद्ध हुआ। भू - राजस्व के निर्धारण एंव वसूली की प्रक्रिया मे ग्राम पंचायतो की अपेक्षा कर अनेक प्रणालियो का प्रयोग किया गया जो असफल रही। विश्लेषण करने पर अंग्रेजी राज्य मे कृषि की निम्नांकित समस्याएँ उत्पन्न हुई जो कृषको मे अशान्ति का कारण थी —

भू - राजस्व की दूषित नीति — अंग्रेजो की दूषित भूमि - नीति कृषको की अशांति के मूल मे मौजूद थी। कुछ समय बाद अलबत्ता अंग्रेजो की नीति मे परिवर्तन आया और उन्होने भू-राजस्व निर्धारित कर उसे कृषि उपज की वृद्धि के साथ निरन्तर अधिकाधिक वसूल करना आरम्भ कर दिया।

2) **भू - राजस्व की राशि निश्चित न होना** — भू-राजस्व की राशि स्थायी न होकर कुछ अवधि तक ही निर्धारित की जाती थी तथा पुनः उसमे वृद्धि भी की जाती रही है।

3) **जनसंख्या की वृद्धि एंव खेतो का विभाजन** —

जनसंख्या की वृद्धि एंव खेतो के निरन्तर विभाजन के कारण कृषि भूमि पर काफी दबाव बढ़ता गया। अतः अधिक परिश्रम करने पर भी कृषि द्वारा जीवन-यापन के साधन उपलब्ध न होना कृषको की अशान्ति का कारण बना।

1855 से 1947 तक कृषकों विद्रोह तथा कृषक आंदोलन —

ब्रिटिश सरकार की शोषणकारी नीति से तंग आकर किसानों ने बार-बार विद्रोह किए और इनकी संख्या में निरन्तर वृद्धि होती रही। प्रारंभ में किसानों ने यह असंतोष और क्रोध अलग-अलग सूदखोर महाजनों और जमींदारों से बदला लेने तथा हिंसा का प्रयोग करने की छुट-पुट कार्यवाहियों के रूप में प्रकट किया।

बंगाल में नील उगाने वालों का विद्रोह —

ब्रिटिश सरकार ने 18वी शताब्दी में बंगाल और बिहार में नील की खेती करानी आरंभ कर दी। यूरोपीय नील बागान मालिक भारतीय खेतीहर मजदूरों के प्रति बहुत कठोर थे। वे कृषकों पर अनेक प्रकार के अत्याचार करते थे तथा मनमानी शर्तों पर नील उगाने के लिए बाध्य करते थे।

मराठा किसानों का विद्रोह —

ब्रिटिश सरकार के उच्च अधिकारियों और गुजराती व मारवाड़ी सूदखोरों के विरुद्ध महाराष्ट्र के किसानों ने विद्रोह किया। यह विद्रोह सर्वप्रथम दिसम्बर 1874 ई० में कल्लूराम मारवाड़ी साहूकार द्वारा एक किसान बाबा साहिब देशमुख के द्वारा 150 रुपये का ऋण न चुकाने के लिए बेदखली आज्ञापत्र के विरुद्ध हुआ।

पंजाब में किसानों का आंदोलन —

पंजाब के किसान भी ऊँचे भू-राजस्व, लगान की वसूली की कठोरता, भूमि के अधिकाधिक गैर-कृषक साहूकारों के पास हस्तांतरण, सिंचाई कर एवं साहूकारों द्वारा बेदखली का भय दिखाने

Scanned with ACE Scanner

के कारण 'अत्याधिक असंतुष्ट थे।

प्रथम विश्वयुद्ध के दिनों मे किसानो का आंदोलन

भारतीय किसानो का असंतोष प्रथम विश्वयुद्ध के शुरू होने के बाद बड़ी तेजी से बढ़ा और उसका स्वरूप दिनों - दिन क्रांतिकारी हुआ। भारत के प्राय: सभी हिस्सो मे किसानो से लगान बढ़ाने, कर्जदारो को गुलाम बनाने और किसानो की जमीन जबरन छीनने की कार्यवाही के विरूद्ध आंदोलन किए गए बाद गंगाधर तिलक ने किसानो से प्राकृतिक विपत्तियो के दिनो मे कर न लेने की अपील की। अनेक स्थान पर बेदखली का प्रतिरोध करने के लिए कुर्क की गई जमीनो की नीलामी का बहिष्कार करने के लिए ग्राम समितियां बनाई गई।

Question: 7 मुगलकाल मे उद्योगो की प्रगति का चित्रण कीजिए।

Answer: 1526 ई० से 1857 तक का समय भारतीय इतिहास मे 'मुगल काल' के नाम से जाना जाता है। मुगल शासको ने एक तरफ जहां अधिकांश भारत पर अपनी विजय पताका फहराई वही दूसरी तरफ उन्होने एक केन्द्रीयकृत शासन व्यवस्था की नींव डालकर राजनीतिक स्थिरता सुदृढ़ की। इस शांति एवं स्थिरता के वातावरण मे भारतीय कृषि, उद्योग व्यापार एवं वाणिज्य का अभूतपूर्व विकास हुआ। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से हम इस अध्याय का निम्नलिखित शीर्षको के तहत अध्ययन करेंगे –

I. कृषि
II. उद्योग एवं हस्तकला

कृषि – भारत सदा की तरह काल

मे भी एक कृषि प्रधान था। इस काल मे भी इससे पूर्व कालो की भाँति शासन की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि था। देश की बहुसंख्यक जनता कृषि अथवा कृषि सम्बन्धित उद्योग-धन्धो पर ही निर्भर थी।

मुगलकाल मे भारतीय कृषि की मुख्य विशेषताएँ –

मुगलकाल मे भारतीय कृषि की अवस्था सल्तनत काल की तुलना मे काफी उन्नत थी। मुगल शासको द्वारा कृषि की अवस्था को सुधारने के लिए काफी प्रयास किये गये।

i) कृषि योग्य भूमि का विस्तार –

मुगलकालीन कृषि की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता थी कि इस काल के दौरान कृषि योग्य भूमि का काफी अधिक विस्तार हुआ। इस काल मे बिहार, अवध तथा बंगाल के कुछ भागो मे जंगलो को साफ करके उस भूमि को कृषि योग्य भूमि बनाया।

ii) कृषि तकनीक या खेती के साधन व तरीके –

यद्यपि मुगल काल मे कृषि करने के ढंग परम्परागत थे फिर भी मिट्टियो तथा प्रकृति और फसलो की आवश्यकता को ध्यान मे रखते हुए भारतीय किसान कई प्रकार के औजारो एंव तकनीक का सहारा लिया करते थे।

iii) कृषि उत्पाद –

भारत के विशाल भू-भाग, विभिन्न प्रकार की मिट्टियो तथा पर्यावरणीय वातावरण के कारण यहाँ कई प्रकार के कृषि उत्पादो का उत्पादन होता था। उत्तरी भारत मे अधिकांश वर्ष मे दो फसले खरीफ तथा रबी मे

उगाई जाती थी।

II उद्योग व हस्तकला –

मुगलकाल मे भौतिक प्रगति का मूल आधार कृषि थी। मुगल सम्राट अकबर द्वारा अपनाये गये राजस्व सुधारो का कृषि उत्पादन पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस काल मे अधिकाधिक क्षेत्रो मे जाने वाली खेती ने उत्पादन को बढ़ाया।

उद्योग –

मुगल शासन काल मे उद्योग के क्षेत्र मे देश को काफी विकास हुआ तथा यहाँ की निर्मित वस्तुओ का विश्व के सभी क्षेत्रो मे स्वागत किया जाता था।

A कृषि पर आधारित उद्योग –

इस श्रेणी मे वे उद्योग आते है जिनमे प्रयोग होने वाला कच्चा माल कृषि क्षेत्र से प्राप्त होता था। इनसे जुड़े उद्योगो का विकास होना स्वाभाविक था। इनका विवरण इस प्रकार है –

I वस्त्र उद्योग –

वस्त्र उद्योग अति प्राचीन काल से ही भारत का सबसे बड़ा उद्योग रहा है। इसके अन्तर्गत सूती, रेशमी एंव ऊनी वस्त्रो का उत्पादन किया जाता था। प्रो. इरफान हबीब ने लिखा है कि मुगल चित्रो एंव राजपूत चित्रो मे सामान्य जनो को वस्त्र पहने दिखाया जाना वस्त्र उद्योग मे क्रांति का सूचक है। वस्त्र उद्योग के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के वस्त्रो का विवरण इस प्रकार है –

(1) सूती कपड़ा –

भारतीय सूती वस्त्र उद्योग मे विकास का सिलसिला मुगलकाल मे भी जारी रहा।

DELTA Pg No. Date

Question-8 19 वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे ब्रिटिश अकाल नीति का परिक्षण करें।

भूमिका -

जब से मानव ने पृथ्वी पर अपने जीवन की शुरुआत की है तब से ही वह अकाल जैसी प्राकृतिक स्थितियों या आपदाओं से परिचित रहा है। यह हम इसलिए कह सकते है कि जितने भी प्राचीन ग्रन्थो का अध्ययन किया जाता है तो उनमे कही-न कही दुर्भिक्ष और विनाशकारी अकालो के परिणामो का वर्णन अवश्य मिलता है अब अकाल का स्वरूप पहले जैसा नही रहा था। बाजार अनाज से भरे होते थे परन्तु ऊँची कीमते होने के कारण लोग उसे खरीद नही पाते थे। औपनीवेशिक शासन के दौरान भारत मे गरीबी का एक महान पहलू या प्रश्न बन गया था। इस युग मे पड़ने वाले अकाल

My NoteBook Sign.

DELTA Pg No. Date

प्राकृतिक होने की अपेक्षा मानव-निर्मित ज्यादा थे, क्योंकि सरकार या व्यापार के क्षेत्र मे जिम्मेदारी की जगहो मे बैठे लोगो ने प्राकृतिक कारको के प्रभाव को इतना उग्र बना दिया कि अकाल को किसी भी स्थिती मे टाला नही जा सकता था।

अकाल के कारण - ब्रिटिश शासन के दौरान पड़ने वाले अकालो ने तो भारतीय जनमानस को मौत के गर्त मे धकेल दिया था। औपनिवेशिक शासन के दौरान अकाल की बारंबारता तथा सूखे की प्रचंडता के लिए निम्न कारक जिम्मेदार थे, जिनका वर्णन इस प्रकार है -

1) आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था का नष्ट होना

औपनिवेशिक शासन के दौरान

My NoteBook Sign.

Scanned with ACE Scanner

हस्तशिल्प उद्योगों का तेजी से पतन हुआ। जिससे आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था नष्ट हो गई।

2) **कृषि का वाणिज्यीकरण** – आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था और जजमानी व्यवस्था के पतन के परिणामस्वरूप नकदी का प्रचलन बढ़ गया। नई भू - राजस्व व्यवस्था में लगान का भुगतान भी नकदी में होता था।

3) **भू - राजस्व व्यवस्था** – औपनिवेशिक शासन के दौरान भू - राजस्व की पुरानी व्यवस्थाओं की जगह नई व्यवस्थाएँ स्थापित की थी। इस व्यवस्था से पहले भूमि पर सामुदायिक स्वामित्व होता था तथा भूमि क्रय - विक्रय की वस्तु नहीं थी। औपनिवेशिक भू-राजस्व व्यवस्था ने भूमि पर निजी स्वामित्व कायम किया और

वह बे - रोकटोक हस्तांतरणीय बन गई।

भारत में अकाल – ब्रिटिश शासनकाल में भारत को अनेक अकालों का सामना करना पड़ा। इनको निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत आसानी से समझा जा सकता है –

1. **1770 ई० से 1860 ई० तक के अकाल** – ब्रिटिश राज्य में सबसे पहला अकाल 1770 ई० में बंगाल, बिहार और उड़ीसा में पड़ा। इस भयंकर अकाल के कारण मृत्युदर गरीबी तथा बिमारियों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। सरकार ने राहत के लिए कोई कार्य नहीं किया। एक - तिहाई जनसंख्या मरने के बाद भी राजस्व 1768 ई० की तुलना में 1771 ई० में अधिक रहा।

DELTA Pg No. Date

2. 1865 - 66 का अकाल -

1865 - 66 के अकाल ने बंगाल, बिहार, उड़ीसा तथा मद्रास के क्षेत्र को बुरी तरह से प्रभावित किया था। यह बड़ा भयंकर तथा व्यापक अकाल था।

3. 1868 - 70 ई० का अकाल -

1868 - 70 ई० के अकाल में मृत्यु संख्या काफी ज्यादा थी। इसने लगभग पूरे राजपूताना को अपनी चपेट में ले लिया था। बड़े - बड़े जनसमूह राजपूताना से भोजन कपड़े और मवेशी के लिए चारे की खोज में निकल पड़े।

4. 1873 - 74 का अकाल -

इस अकाल से लगभग 40,000 वर्ग मील का क्षेत्र प्रभावित हुआ। तथा खाद्यानों की आपूर्ति में इस समय लगभग 37.5 लाख टन की कमी देखी गई।

My NoteBook Sign.

DELTA Pg No. Date

Question:9 औपनिवेशिक काल में सिंचाई व्यवस्था के विकास पर प्रकाश डालिए।

Answer: मानसून की अनिश्चितता की वजह से सिंचाई भारतीय कृषि के लिए एक जरूरी निर्णायक कारक रही है। प्राचीनकाल से भारतीय लोगों की आजीविका का मुख्य आधार कृषि रहा है। तथा राज्य से हमेशा आशा की जाती रही है कि वह सिंचाई सुविधाएँ प्रदान करे। प्राचीन भारत में राज्यों ने इस आशा को पूरा भी किया।

कंपनी शासन के अधीन सिंचाई व्यवस्था का विकास

कंपनी ने अपने शासन की शुरुआत में चली आ रही कृत्रिम सिंचाई व्यवस्था के रख - रखाव में रुचि दिखाई। इस कार्य के सर्वेक्षण के लिए 1810 ई० में एक समिति का भी गठन किया गया। इसी तरह कावेरी और कोलेरून के पुनर्जीवन के भी प्रयास किए

My NoteBook Sign.

Scanned with ACE Scanner

DELTA Pg No. Date

गए। कंपनी के शासनकाल में उत्तरी तथा दक्षिणी भारत में किए गए कार्यों को सिंचाई क्षेत्र में किए गए कार्यों को निम्न रूप से भी समझा जा सकता है -

1) 1825 ई० में हांसी तथा हिसार तक जाने वाली नहर का पुनर्निर्माण किया गया।

2) 1847 - 53 में गोदावरी सिंचाई परियोजना को पूर्ण किया गया।

3) कृष्णा सिंचाई परियोजना को 1855 ई० में पूरा किया गया।

4) 1854 ई० में लोक निर्माण विभाग (P.W.D) की स्थापना की गई।

ताज के अधीन सिंचाई व्यवस्था का विकास

1858 ई० के बाद कुछ समय के लिए सिंचाई व्यवस्था को विकसित करने के लिए कई तरह के प्रयोग किए गए। शुरू में निजी कंपनियों को यह कार्य

My NoteBook Sign.

DELTA Pg No. Date

सौंपा गया तथा मुनाफे में सरकार ने अपनी हिस्सेदारी भी साथ रखी। परन्तु 1863 ई० के बाद भारत सरकार की वित्तीय स्थिति सुधरने लगी तो उसने इस प्रयोग को समाप्त करने का निर्णय लिया। 1864 ई० में भारत मन्त्री ने भी इसे अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी। सरकार को दक्षिण भारत में सिंचाई सुविधाओं में व्यय का अच्छा प्रतिफल मिला क्योंकि वहाँ की भौगोलिक स्थिति के कारण इन कार्यों में काफी कम खर्चा हुआ।

1881 ई० शुरू हुए संरक्षणात्मक सिंचाई कार्यों को 1900 तक सम्पन्न कर लिया गया। बंबई की नीरा नहर इसी तरह का उदाहरण है।

1901 ई० में भारत सरकार द्वारा सर कॉलिन स्काट - मौन - क्रिफ की अध्यक्षता में सिंचाई

My NoteBook Sign.

Scanned with ACE Scanner

आयोग का गठन किया गया। 1903 ई० इसने अपने सुझाव दिए, जिन्हें निम्न प्रकार से समझा जा सकता है —

1) संरक्षणात्मक सिंचाई कार्यों को अधिक महत्व दिया जाए क्योंकि इससे अकालों के प्रभावों को कुछ हद तक कम किया जा सकता है।

2) पंजाब में सिंचाई सुविधाओं के विकास में हिम पोषित नदियों की अपार जल संसाधनों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

आधुनिक भारत में सिंचाई परियोजनाओं का हमारा अध्ययन तब तक अधूरा ही रहेगा जब तक हम पंजाब कैनाल कालोनियों सिंचाई परियोजना का अध्ययन नहीं करेंगे। यह सिंचाई योजना अन्य सभी योजनाओं से पूर्णतः भिन्न थी। इस सिंचाई योजना की मुख्य विशेषताओं को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है —

i) इन परियोजनाओं के माध्यम से बंजर भूमि के उन क्षेत्रों को कृषि लायक बनाया गया जहां पहले कोई मानव बस्ती नहीं थी।

ii) इस बंजर भूमि पर अब न सिर्फ सिंचाई सुविधाओं अपितु ऐसे लोगों की भी जरूरत थी जो इस भूमि को कृषि योग्य बना सकें।

iii) अत्यन्त कुशल प्रणाली के अनुरूप इस योजना का संचालन किया गया।

iv) इस परियोजना की शुरुआत निचली चिनाब नहर के निर्माण से हुई।

v) 1892 ई० में इसे पूरा करके चालू भी कर दिया गया

vi) बाहर से लाकर किसानों को यहां पर बसाया गया तथा उन्हें खेती करने के लिए जमीन पट्टे पर दी गई।